Volume-10, No. 2 Aug.-2023, pp. Hin.05-08

# भारतीय जीवन दर्शन एवं संचार परंपरा में आध्यात्मिक संचार का महत्व

**प्रो० प्रशान्त कुमार,** शोध निर्देशक
तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत।
**मिस. बीनम यादव, शोधार्थी**

**सारांश**
भारत सर्वदा नवीन प्रयोगों, अन्वेषणों के लिये जाना जाता है। भारत की संचार परंपरा भी उसी का एक हिस्सा है। आध्यात्मिक संचार की परंपरा हमारे जीवन दर्शन की महत्वपूर्ण कड़ी रही है। किसी भी कठिन से कठिन विषय की खोज ऋषियों ने आध्यत्मिक संचार के माध्यम से ही की है। भारतीय दर्शन के अनेक पक्ष है। कुछ समाज के सामने है तो कुछ अभी तक छुपे हुए, लेकिन ज्ञान परंपरा की वृहद श्रृंखला से अब भी हमे परिचित होना शेष है। ऐसा ही एक पक्ष आध्यात्म और संचार से जुड़ा है। जिसके माध्यम से हम सफल जीवन यापन कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की पहली आवश्यक्ता ही सफल रुप से जीवन जीने की रहती है। इस आवश्यकता की पूर्ती में आध्यात्मिक संचार सहायक है और आध्यात्मिक संचार की शुरूआत होती है अवचेतन मन से। आध्यात्मिक संचार भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आध्यात्मिक संचार माध्यम व्यक्ति के आत्म–समर्पण और उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होता है। आध्यात्मिक संचार न केवल भारतीय समाज और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा था, बल्कि यह आज भी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का महत्वपूर्ण तत्त्व रहा है और आधुनिक भारतीय संचार में भी अपना महत्व साबित कर रहा है।

**मुख्य शब्द–** परंपरा, दर्शन, आध्यात्मिक संचार, आध्यात्म, सनातन संस्कृति, भारतीय संस्कृति

## आध्यात्म और संचार

आध्यात्म व्यक्ति को उसके आंतरिक जीवन और आत्मा के साथ जुड़ने की प्रक्रिया है, जबकि संचार व्यक्ति और समुदाय के बीच जानकारी साझा करने की प्रक्रिया है। ये दोनों विषय अपने आप में महत्वपूर्ण है और व्यक्ति के व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है। आध्यात्म वह अन्तर्निहित और आंतरिक जीवन के विकास की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने आंतरिक योग्यताओं, उद्देश्यों और आत्मा के साथ जुड़ता है। यह व्यक्ति को उसके जीवन के उद्देश्य और अर्थ को समझने की क्षमता प्रदान करता है और उसे उसके सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन को संतुलित रूप से जीने में मदद करता है। जबकि संचार, व्यक्ति या समूह के बीच जानकारी, विचार, भावनाएं और विचारों को संवेदनशीलता से साझा करने की प्रक्रिया है। यह भाषा, श्रवण, बोलना, पढ़ना, लिखना और अनुसरण के माध्यम से हो सकता है। संचार के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर जुड़ सकता है और अपने विचारों एवं भावनाओं को दूसरों के साथ साझा कर सकता है।

भारतीय संस्कृति, सभ्यता, संस्कार और इसके ज्ञान ने हमेशा से ही विश्व को मानवीय कल्याण के लिए प्रेरित किया है। भारतीय वेद, धर्म, संस्कार, ज्ञान, विद्या और विचारधाराएं प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृतियों के विकास का इतिहास, धर्मों के विकास और उनके स्वरूपों के प्रत्यक्ष में आने की एक गहरी परंपरा का ही इतिहास है। भारतीय संस्कृति जितनी पुरानी है उससे कहीं अधिक यह विलक्षण भी है।

आध्यात्म का आधार वेद होता है और भारतीय संस्कृति में आध्यात्म निहित है। ऋग्वेद में संवाद सूक्त के अन्तर्गत दशम मंडल में सरया – पणि (कुतिया और गौ) संवाद है, तो यम यमी तथा पुरूरवा उर्वशी संवाद का भी उल्लेख है। मण्डल तीन में विश्वामित्र और नदी संवाद एवं कठोपनिषद् में नचिकेता–यम के बीच अद्भुत संवाद प्रकरण है। बृहदारण्यक में याज्ञवल्क्य

ऋषि का मैत्रेयी और गार्गी से संवाद स्मरणीय है। इसी तरह रामचरितमानस में शिव–पार्वती संवाद और काकभुसुण्डी– गरुण संवाद भारतीय संचार की पारंपरिकता का शाश्वत प्रमाण हैं। भारतीय जीवन दृष्टि की इसी परिपाटी में संचार को माध्यम बनाकर आदि शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का सिद्धांत समाज को दिया।

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उसकी प्राचीनता एवं महत्ता का परिचायक होती है। भारतीय संस्कृति अपने अंदर वेद की मर्यादा को समाहित किए हुए हैं। वेद, उपनिषद्, पुराण, धार्मिक साहित्य आदि विभिन्न ग्रंथों में भारत राष्ट्र की संस्कृति का गहनतम विश्लेषण उपलब्ध है। वहीं दूसरी तरफ वैदिक संदर्भों का भी सांगोपांग वर्णन मिलता है।

**भारतीय परंपरा में आध्यात्मिक संचार व संवादः**

निम्नलिखित संवाद व संचार आध्यात्मिकता में आत्मिक संवाद के विभिन्न उपायों को प्रस्तुत करती हैं। ये व्यक्तियों को परमात्मा की खोज करने और अनुभव करने के लिए आध्यात्मिक संचार के उद्देश्य से उपयोगी है

**ऋग्वेदः**

ऋग्वेद, हिंदू धर्म के एक प्राचीन और पवित्र ग्रंथों में से एक है। यहाँ देवी देवताओं और प्राकृतिक शक्तियों को समर्पित मंत्र और प्रार्थनाओं के भजन हैं। इसके श्लोकों में अलग–अलग व्यक्तियों के बीच संवाद दर्शाये गए हैं। ये संवाद दार्शनिक, ब्रह्मांडिक और नैतिक विचारों को संवेदनशील करने के लिए हैं। इन संवादों में ही आध्यात्मिक संचार है।

**विश्वामित्र और नदी (तृतीय मंडल):**

ऋग्वेद के तृतीय मंडल में ऋषि विश्वामित्र और एक नदी के बीच वार्ता को तत्त्विक खोज और आत्मा की खोज का प्रतीक माना जाता है। यह उपनिषदों में बताया गया है कि प्रकृति भी आध्यात्मिक संचार और दर्शन के लिए एक माध्यम हो सकती है।

**कठोपनिषदः**

कठोपनिषद एक महत्वपूर्ण उपनिषद है जो जीवन, मृत्यु और अनंत आत्मा (आत्मा) के स्वरूप की खोज करती है। यम और नचिकेता के बीच संवाद इसका मुख्य विषय है। नचिकेता की वीरता और अमरत्व की प्राप्ति के बारे में उसके विचार और यम के जवाब इस गहरे आध्यात्मिक चर्चा का ह्रदय है। कठोपनिषद में संवाद आध्यात्मिक संचार आधारित है।

**बृहदारण्यक उपनिषदः**

यह एक महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथ है जिसमें दार्शनिक वार्ता, चर्चाएं और संवाद शामिल हैं। ऋषि याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नियों मैत्रेयी और गार्गी के बीच एक गहरा दार्शनिक अन्वेषण है। वे आत्मा और परमात्मा (ब्रह्म) के स्वरूप पर चर्चा व संवाद करते हैं।

**रामचरितमानसः**

तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भगवान राम के जीवन और उनके आदर्शो की कहानी है। इसमें न केवल मानव पात्रों के बीच संवाद हैं, बल्कि देवी–देवताओं के बीच वार्ताएँ भी है। उदाहरण के तौर पर भगवान शिव और पार्वती तथा काकभुशुण्डी (कौवा) और गरुण (एक दिव्य पक्षी) के बीच संवाद धार्मिक संचार का अद्वितीय उदाहरण है।

**आदि शंकराचार्य और अद्वैतवादः**

आदि शंकराचार्य, एक प्रमुख दार्शनिक और तत्त्वज्ञानी थे, ने अद्वैतवाद के सिद्धांतों का समाज में प्रसार किया। उन्होंने विभिन्न दार्शनिक पाठशालाओं और विद्यापीठों में अपने विचारों को व्यक्त किया एवं संवाद किया। उन्होंने अपने विभिन्न मतों और प्रस्तावनाओं को वैदिक संवाद और चर्चाओं के माध्यम से समझाया था।

**भगवद गीताः**

भगवद गीता भारतीय महाकाव्य, महाभारत, का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह कुल 18 अध्यायों में वर्णित है। महाभारत युद्ध के समय भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच हुए संवाद पर आधारित इस महाकाव्य में आध्यात्मिक संचार है। श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच के वैदिक संवाद में भगवान कृष्ण ने आध्यात्मिक ज्ञान, कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग के महत्वपूर्ण सिद्धांतों का उपदेश दिया।

**संत मत परंपराः**

संत मत परंपरा उद्भवित हुई और मध्यकालीन काल में विकसित हुई धार्मिक संवाद परंपरा है, जिसमें एक जीवंत आध्यात्मिक शिक्षक या गुरु के मार्गदर्शन में आत्म–अनुभव और ज्ञान को प्राप्त करने का महत्व दिया जाता है। गुरु अपने अनुयायियों को अंतर्निहित अनुभव और ज्ञान सिखाते हैं, जो उन्हें आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

**भारतीय सूफी आंदोलनः**

भारत में सूफी आंदोलन एक गुफ्तगू और मौनब्रह्मचर्य परंपरा थी, जिसमें ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संवाद और अनुभव की महत्वपूर्णता को माना जाता था। सूफी संतों ने कविताएँ, गीत

और किस्से के रूप में आत्म–अनुभव और भगवान के साथ आत्मिक संवाद को व्यक्त किया।

**भक्ति और संत साहित्यः**

भक्ति और संत आंदोलन मध्यकालीन भारत में प्रचलित थे, जिसमें कबीर, मीराबाई, तुलसीदास और अन्य संत भगवान के प्रति अपने भक्ति और श्रद्धा को साहित्यिक व सांस्कृतिक संचार के माध्यम से अभिव्यक्त करते थे। ये रचनाएँ केवल व्यक्तिगत भक्ति की अभिव्यक्ति ही नहीं थीं, बल्कि भगवान के साथ आत्मिक संवाद को प्रेरित और ऊंचाईयों तक पहुँचाने के लिए भी वाहक भी थीं।

**ज्ञान योग और आत्म–संवादः**

ज्ञान योग वह मार्ग है जिसमें व्यक्ति वास्तविकता और आत्मा के स्वरूप को पूरी तरह से समझने के लिए आत्म संवाद करता है। आंतरिक अध्ययन और दार्शनिक संवाद के माध्यम से व्यक्ति अज्ञेय सत्यों के पीछे समान आत्मा (ब्रह्म) का वास्तविक स्वरूप जानने का प्रयास करता है।

**योगिक संवादः**

कुण्डलिनी योग और क्रिया योग जैसी विभिन्न योगिक प्रक्रियाओं में, आत्मा की ऊँचाईयों और आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति के लिए वैदिक संचार का प्रयास किया जाता है। शारीरिक और मानसिक क्रियाओं द्वारा नियमित व संयमित अभ्यास के माध्यम से ईश्वर से सीधे संवाद करने का प्रयास, साथ ही आत्मसंवाद के माध्यम से आत्मा और शरीर को भी एकरुप करने का प्रयास किया जाता है।

**तंत्र और अनुष्ठानिक संवादः**

तंत्र विभिन्न प्रकार के अनुष्ठानों को शामिल करता है जो दिव्य संवाद के रूप में समझे जाते हैं। यह आमतौर पर मंत्रों, यंत्रों (पूजन डायग्राम) और अनुष्ठानों के उपयोग को शामिल करता है ताकि उच्च ऊर्जाओं से जुड़ा जा सके और वैदिक संचार द्वारा आध्यात्मिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

**समकालीन आध्यात्मिक गुरुः**

आधुनिक समय में, विश्वभर में कई आध्यात्मिक शिक्षक और गुरु हैं जो आध्यात्मिक संचार की परंपरा को जारी रखते हैं। वे मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, सत्संग (आध्यात्मिक सभा) आयोजित करते हैं और दुनिया भर के आध्यात्मिक साधकों तक पहुंचने और सिखाने के लिए संचार के विभिन्न रूपों का उपयोग करते हैं।

**जप और मंत्र ध्यानः**

जप और मंत्र एक पवित्र ध्वनि के साथ संवाद के अध्ययन का रूप है। इस अभ्यास से व्यक्ति किसी विशिष्ट मंत्र को अवर्णन करता है, जिसे आध्यात्मिक ऊर्जाओं को उत्तेजित करने और उच्च चेतना की स्थितियों से जुड़ने के रूप में विश्वस्त किया जाता है। जप और मंत्र पूर्णतः वैदिक संचार है।

**गुरु–शिष्य परंपराः**

भारतीय आध्यात्मिक मार्गों में गुरु–शिष्य संबंध एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। गुरु वह राह–दर्शक होते हैं जो अपने शिष्य को संवाद व संचार द्वारा आध्यात्मिक शिक्षाएँ और अभ्यास सिखाते हैं। व्यक्तिगत उपदेश और उदाहरण के माध्यम से गुरु शिष्य की आत्मिक विकास और साक्षात्कार में सहायक होते हैं।

**नाद योगः**

नाद योग एक प्रकार की योग है जिसमें ध्वनि और संवाद को एक आत्मिक अन्वेषण और संयोजन के रूप में प्रयोग किया जाता है। संचार और संवाद के बीच सामंजस्य से आत्मा के पीछे छिपी ईश्वरीय ध्वनि के साथ आत्मा के संबंध को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

**जैन धर्म में ध्यानः**

जैन धर्म में ध्यान और अंतरदृष्टि को एक आत्मिक संवाद के रूप में महत्वपूर्ण माना जाता है। साधक आंतरिक स्थितियों की अवलोकन करते हैं और अनन्त सत्यों के साथ जुड़ते जाते हैं।

**संत साहित्यः**

भारत में विभिन्न संतों ऋषियों और कवियों ने अपने आत्मिक और दार्शनिक विचारों को कविता और साहित्य के रूप में व्यक्त किया। ये रचनाएँ केवल कला की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि साहित्यिक व वैदिक संचार द्वारा गहरे आत्मिक सत्यों को संवेदनशील करने और साधकों को प्रेरित करने के लिए एक उपयोगी साधना हैं।

**आत्म साक्षात्कार और अनुभवः**

भारतीय आध्यात्मिक संचार परंपराओं में आध्यात्मिक ज्ञान को सीधे अनुभव से प्राप्त करने का जोर दिया गया है। यह ध्यान, आत्म–चिंतन और गहरे विचार के माध्यम से सच्चे स्वरूप का ब्रह्म के रूप में प्रत्याकरण करने का प्रयास करता है।

**योगिक प्रसार (शक्तिपात):**

कुछ योगिक परंपराओं में, उन्नत अभ्यस्तों या सिद्ध गुरुओं का मानना है कि वे अपने शिष्यों को सीधे संवाद करने के लिए आत्मिक ऊर्जा या जागरूकता की प्रेरणा देते हैं, चाहे वह सीधा संपर्क या उद्देश्य हो। यह प्रसारण आत्मिक प्रगति

को तेजी से बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली उपाय के रूप में देखा जाता है।

**श्री अरविंदो का अभिन्न योगः**

श्री अरविंदो का अभिन्न योग एक समग्र वैदिक संचार दृष्टिकोण है जो व्यक्ति के सभी पहलुओं को समाहित करने का प्रयास करता है, जो दिव्य का सीधा और गहरा साक्षात्कार कराता है। इसमें सच्चे उन्नति और मानव प्रकृति के परिवर्तन को महत्व दिया जाता है।

आध्यात्मिक संचार भारतीय संस्कृति और विचारधारा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह धार्मिक विचारों, धार्मिक उपदेशों और ज्ञान का पारंपरिक रूप से संवहन करने की प्रक्रिया है। आध्यात्मिक संचार मुख्यतः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद जैसी प्राचीन धार्मिक ग्रंथों पर आधारित है। आध्यात्मिक संचार न केवल ग्रंथों के माध्यम से हुआ, बल्कि उपासनाओं, यज्ञों, पर्वों, त्योहारों, आचारों और संस्कृति के अन्य विभागों के माध्यम से भी हुआ। यह ध्यान, योग, यज्ञ, मंत्र जप आदि विधाओं के माध्यम से व्यक्त होता था। इस प्रकार, आध्यात्मिक संचार न केवल बोली भाषा से, बल्कि आदर्शों, परंपराओं और आचारों के माध्यम से भी सम्पन्न हुआ। आध्यात्मिक संचार आत्मिक विकास और वैदिक ज्ञान को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, जो व्यक्ति और समाज के लिए आश्चर्यपूर्ण लाभ प्रदान कर सकता है। आध्यात्मिक संचार के माध्यम से व्यक्ति अपने आंतरिक स्वरूप की खोज कर सकते हैं, जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों का सामना कर सकते हैं और अपने जीवन को एक नई प्राकृतिक और सात्विक दिशा में बदल सकते हैं।

**संदर्भ सूची–**

1. सिंह, सुखनंदन (2022). स्पिरिचुअल जर्नलिज्म. इविनसिपब पब्लिशिंग, बिलासपुर
2. कृष्ण, राहुल (2018). विविध संचार माध्यम एवं पत्रकारिता. कला प्रकाशन. वाराणसी
3. वेद, विजय (2019). भारतीय संस्कृति एवं विरासत. ध्येय प्रकाशन. नई दिल्ली
4. दिनकर, रामधारी सिंह (2011). संस्कृति के चार अध्याय. लोकभारती प्रकाशन. इलाहाबाद
5. http://literature.awgp.org/english/book